भारत में जनसँख्या विस्फोट

Population Explosion in India

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

जनसँख्या विस्फोट जनसँख्या वृद्धि के उस अवस्था को कहते है जिसमे मृत्यु दर में, खासकर बाल मृत्यु दर में बहुत कमी हो जाती है, परंतु जन्म दर और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हो जाती है । इन सबके कारण जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है ।

दुसरे शब्दों में, जब किसी भी देश की प्राकृतिक संसाधनों पर मानव संसाधन का बोझ अत्यधिक पड़ने लगता है तो उसे जनसंख्या विस्फोट कहते हैं । माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार जनसंख्या दोगुनी रफ्तार (2,4,8,16,32) से बढ़ती है जबकि संसाधन सामान्य गति (1,2,3,4,5) से बढ़ते हैं । परिणामतः प्रत्येक 25 वर्ष बाद जनसंख्या दोगुनी हो जाती है जबकि संसाधन नहीं ।

भारत की जनसँख्या 2011की जनगणना के अनुसार **1,21,08,54,977**.है जोकि 2050 में 160 करोड़ अनुमानित है । 2027 में भारत की जनसँख्या चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व में प्रथम स्थान पर आ जाएगी । वर्तमान में भारत की जनसँख्या विश्व के जनसँख्या की 16.7% (वर्तमान 17.7%) है जबकि क्षेत्रफल मात्रा 2.42% है । भारत का जनघनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है । यह जनसँख्या के भयानक दबाव को प्रदर्शित करता है ।

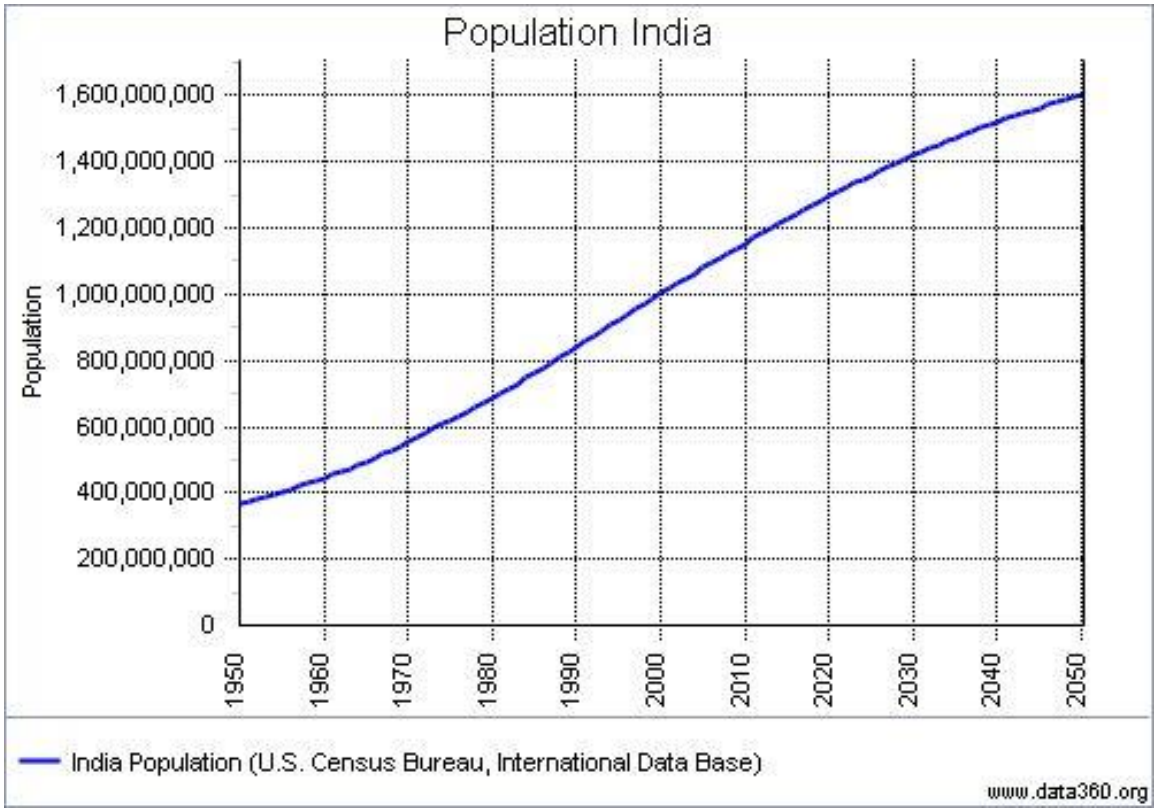

चित्र: भारत में जनसँख्या वृद्धि स्रोत: https://blogs.uoregon.edu/childlimit/making-a-difference/

जनसंख्या विस्फोट के कारण

हालाँकि जनसंख्या विस्फोट अधिकतर कम विकसित देशों में पाई जाती है परंतु भारत की विशाल जनसंख्या के कारण कोई भी वृद्धि बड़ी दिखती है । बीते दो दशकों से भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आई है । भारत में जनसंख्या अभिशाप नहीं है क्योंकि यहां की अधिसंख्य जनसंख्या युवा है । भारत में जनसंख्या विस्फोट के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

1. **अशिक्षा**: यह सर्वविदित है की अशिक्षा जनसंख्या वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण है । भारत में अभी-भी सिर्फ 74% लोग ही साक्षर हैं और यह आंकड़ा गांव में और भी कम है । यहां गांव में गरीबी व्याप्त है और गरीब लोग अपनी संतान को कमाई का अतिरिक्त हाथ मानते हैं । धार्मिक कारणों से यहां अभी-भी संतान को ईश्वर की देन मानते हैं और गर्भनिरोधकों का प्रयोग धर्म के खिलाफ समझते हैं ।
2. **अंधविश्वास**: भारत की आत्मा गांवों में बसती है । गांव में परिवार नियोजन के उपायों को गलत नजर से देखते हैं । जैसे, लोगों की मान्यता यह है कि पुरुष नसबंदी कराने से व्यक्ति कमजोर हो जाता है और मेहनत करने लायक नहीं रहता । इसलिए सारा बोझ महिलाओं को ही उठाना पड़ता है ।
3. **परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता**: आज भी परिवार नियोजन के तरीके अपनाने में दंपति संकोच करते हैं । वैसे भी पुरुष इस दायित्व को नहीं निभाना चाहते और यह एक तरह से महिलाओं की जिम्मेवारी मानी जाती है । अशिक्षा और अंधविश्वास के कारण यहां की अधिकांश जनता परिवार नियोजन के विभिन्न उपायों को जानते ही नहीं और कुछ जानते भी है तो उनका प्रयोग धर्म के खिलाफ मानते हैं । कई लोग तो झिझक के कारण इन साधनों को खरीद भी नहीं पाते और ना ही इस्तेमाल कर पाते हैं ।
4. **मनोरंजन के साधनों की कमी**: गांव के लोग के पास मनोरंजन के साधनों की अभी भी भारी कमी है । ना ही वहां सिनेमा हॉल है, ना ही पार्क है, ना ही अन्य विशेष साधन जैसे टीवी इत्यादि है और इसके कारण अधिकांश लोग यौन सम्बन्ध को ही मनोरंजन का साधन मानते हैं और जनसंख्या बढ़ती चली जाती है ।
5. **सरकार की गलत नीतियां:** हालांकि सरकार एक अच्छे सोच के तहत बच्चों के जन्म पर 5000 रु देती है जिसका उद्देश्य जच्चा-बच्चा के पोषण से संबंधित है परंतु इसी पैसे के लालच में कई लोग बच्चों की संख्या बढ़ाते चले जाते हैं ।
6. **शिशु मृत्यु दर पर अंकुश**: आजादी के पहले देश में शिशु मृत्यु दर अत्यधिक थी लेकिन स्वास्थ्य सेवाओं के कारण इस पर काफी हद तक अंकुश लग गया है । 1990 में भारत की शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 पर 129 थी, 2005 में घटकर 58 हो गई जबकि 2017 में यह 39 रह गई है । परिणाम यह हुआ कि परिवार में बच्चों की संख्या बढ़ती चली गई ।
7. **लिंग आधारित भेदभाव**: हालांकि भारतीय संविधान ने देश में लिंग आधारित भेदभाव नहीं किया और महिलाओं को भी समान अधिकार दिए हैं । इसके बावजूद भी भारतीय समाज में भेदभाव नहीं मिटा है । पुत्र की चाह में भी कई अनचाही बेटियां पैदा हुई ।

जनसंख्या विस्फोट के परिणाम

भारत की तेजी से बढ़ती आबादी लगातार तबाही के संकेत दे रही है क्योंकि मौजूदा संसाधनों से कहीं अधिक मानव संसाधन है। जिसके चलते **बेरोजगारी, बीमारी और भुखमरी** तेजी से पांव पसार रही है। एक आश्चर्यजनक और खौफनाक रिपोर्ट के मुताबिक एक जनवरी 2020 के दिन भारत में 69000 बच्चों ने जन्म लिया जबकि दुनिया की सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन में केवल 46 हजार बच्चों का जन्म हुआ। चीन के पास भारत से तीन गुना अधिक जमीन और उसकी अर्थव्यवस्था भी भारत की तुलना में 5 गुना बढ़ी है। जनसँख्या विस्फोट के निम्नलिखित परिणाम होते हैं:

1. **संसाधनों पर दबाव:** माल्थस के अनुसार जनसंख्या वृद्धि दोगुने रफ्तार से होती है जिस कारण संसाधन पर अत्यधिक दबाव पैदा करते हैं और यह दबाव किसी भी देश के विकास को प्रभावित करता है और देश गरीबी के दलदल में फंसता चला जाता है ।
2. **जीवन स्तर में गिरावट:** भारत में अक्सर यह देखा जाता है कि परिवार में कमाने वाले एक और खाने वाले कई होते हैं ऐसी स्थिति में लोगों को शारीरिक जरूरतों के अनुसार भोजन और पोषण नहीं मिल पाता है फलस्वरूप उनके जीवन स्तर में गिरावट आती है भारत में आज भी बहुत से गांवों में यह सामान्य बात है ।
3. **गरीबी:** गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जिससे हमारा पूरा जीवन प्रभावित होता है । इसके कारण सभी बच्चों की ठीक से पढ़ाई, लिखाई और स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया जाता और इसका परिणाम यह होता है कि आने वाली पीढ़ी भी इस दलदल में फंसती चली जाती हैं ।
4. **बेरोजगारी:** जिस गति से जनसँख्या बढ़ रही है उस गति से रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं । परिणामस्वरुप बेरोजगारी में बेतहाशा वृद्धि हो रही है । यह बेरोजगारी भ्रष्टाचार पैदा करती है । भारत में मई 2020 में बेरोजगारी दर 22.70% के उच्चतम स्तर पर थी ।
5. **भुखमरी:** जनसँख्या में बेतहाशा वृद्धि के कारण खाद्य संकट उत्पन्न हो जाता है । 2019 के वैश्विक भुखमरी सूचकांक के अनुसार भारत 117 देशों की सूची में 102 स्थान पर था जो गंभीर की श्रेणी में था । यह एक शर्मनाक बात है । यह भुखमरी भी भ्रष्टाचार पैदा करती है ।
6. **भ्रष्टाचार:** जनसँख्या में बेतहाशा वृद्धि के कारण भ्रष्टाचार पैदा होती है । 2019 के विश्व भ्रष्टाचार सूचकांक के अनुसार 180 देशों की सूची में भारत का स्थान 80 पर था जो काफी चिंताजनक है ।
7. **देश के विकास पर प्रभाव:** कोई भी देश सभी विकास कर पाता है जब वहां के लोग जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में ज्यादा सोचना नहीं पड़ता है यानी कि वह आसानी से पूर्ण हो जाती हैं तभी लोग विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास की कल्पना कर पाते हैं ।

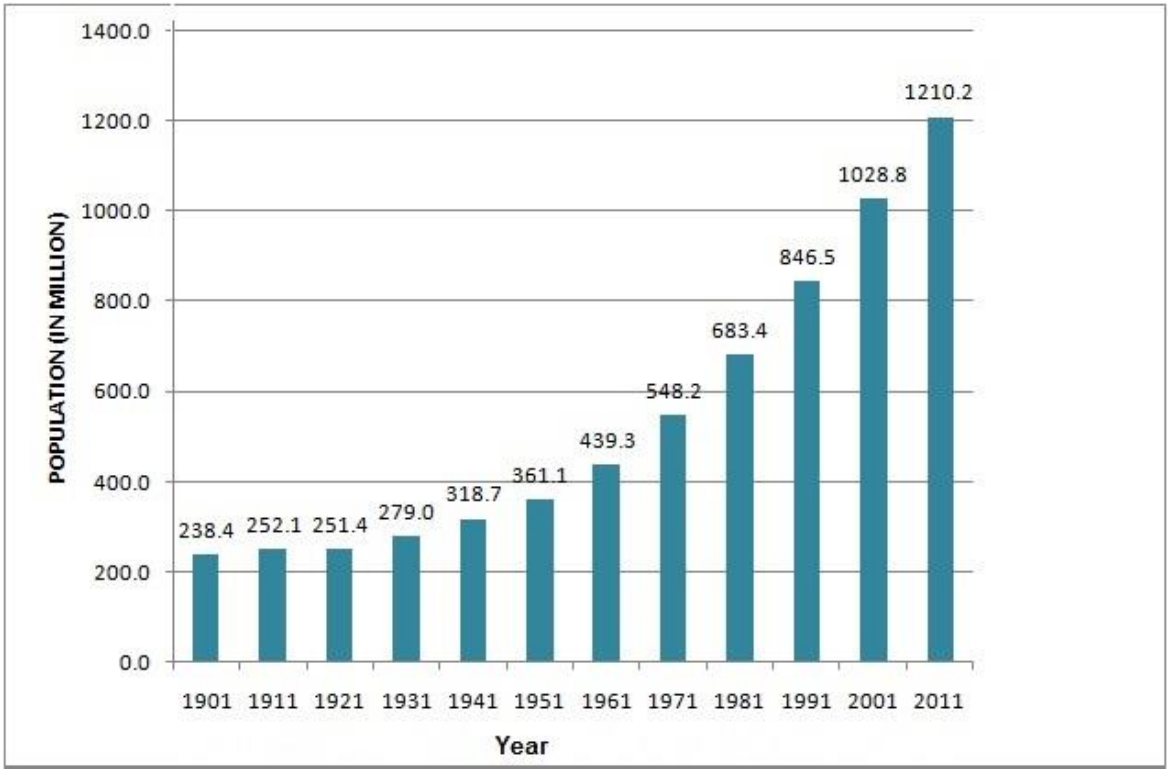

चित्र: भारत की जनसँख्या स्रोत: https://cpb-us-e1.wpmucdn.com/blogs.uoregon.edu/dist/5/14678/files/2012/09/Pop_million-27982v9.jpg

जनसँख्या विस्फोट रोकने के उपाय

एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत की आबादी चीन से भी अधिक हो जाएगी। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि विभिन्न नकारात्मक परिणाम उत्पन्न करते हैं । निम्नलिखित उपायों से जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को रोका जा सकता है-

विवाह की आयु में वृद्धि: आयु की एक निश्चित अवधि में मनुष्य की प्रजनन दर अधिक होती है। यदि विवाह की आयु में वृद्धि की जाए तो बच्चों की जन्म दर को नियंत्रित किया जा सकता है।

आर्थिक विकास: परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाकर तथा उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाकर जनसंख्या वृद्धि को कम किया जा सकता है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि उच्च जीवन स्तर वाले लोग छोटे परिवार को प्राथमिकता देते हैं। महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार तथा उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना।

शिक्षा का विस्तार: शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा लोगों के अधिक बच्चों को जन्म देने के दृष्टिकोण को परिवर्तित करना । भारत में अभी-भी एक बड़ी जनसंख्या शिक्षा से दूर है । इसलिये परिवार नियोजन के लाभों से अवगत नहीं है । विभिन्न संचार माध्यमों जैसे- टेलीविज़न, रेडियो, समाचार पत्र आदि के माध्यम से लोगों में विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में जागरूकता लाने का प्रयास करना चाहिये।

जागरूकता: भारत में अनाथ बच्चों की संख्या अधिक है तथा ऐसे परिवार भी हैं जो बच्चों को जन्म देने में सक्षम नहीं हैं। ऐसे परिवारों को बच्चे गोद लेने के लिये प्रोत्साहित करना, साथ ही अन्य परिवारों को भी बच्चों को गोद लेने के लिये प्रेरित करना। इस प्रकार से न सिर्फ अनाथ बच्चों की स्थिति में सुधार होगा बल्कि जनसंख्या को भी नियंत्रित किया जा सकेगा।

रूढ़िवादिता: भारत में विभिन्न कारकों के चलते पुत्र प्राप्ति को आवश्यक माना जाता है तथा पुत्री के जन्म को हतोत्साहित किया जाता है। यदि लैंगिक भेदभाव को समाप्त किया जाता है तो पुत्र की चाहत में अधिक-से-अधिक बच्चों को जन्म देने की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है।

भारतीय समाज में किसी भी दंपत्ति के लिये संतान प्राप्ति आवश्यक समझा जाता है तथा इसके बिना दंपत्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है, यदि इस सोच में बदलाव किया जाता है तो यह जनसंख्या में कमी करने में सहायक होगा।

परिवार नियोजन: भारत में जनसंख्या वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है, इसका प्रमुख कारण परिवार नियोजन के बारे में लोगों में जागरूकता का अभाव है। यदि नियोजन द्वारा बच्चों को जन्म दिया जाए तो यह जनसंख्या नियंत्रण का सबसे कारगर साधन हो सकता है।

सरकारी नीतियाँ: सरकार को ऐसे लोगों को विभिन्न माध्यमों से प्रोत्साहन देने का प्रयास करना चाहिये जो परिवार नियोजन पर ध्यान देते हैं तथा छोटे परिवार को प्राथमिकता देते हैं।

अन्य उपाय: सामाजिक सुरक्षा तथा वृद्धावस्था में सहारे के रूप में बच्चों का होना आवश्यक माना जाता है। किंतु मौजूदा समय में विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं सुविधाओं के कारण इस विचार में बदलाव आया है। इसी प्रकार भारत में शहरीकरण जनसंख्या वृद्धि के साथ व्यूत्क्रमानुपातिक रूप से संबंधित माना जाता है। यदि शहरीकरण को बढ़ावा दिया जाता है तो निश्चित रूप से यह जनसंख्या नियंत्रण में उपयोगी साबित होगा।

भारत में परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरुआत 1952 में ही हो गई थी और ऐसा करने वाला विश्व का पहला देश था । 1970 के दशक में भारत के नीति निर्माताओं ने उस समय **"हम दो हमारे दो" का नारा दिया था** और जनसंख्या नियंत्रण के लिए नसबंदी अभियान चलाया था ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जनसँख्या विस्फोट की स्थिति सभी देशों के विकास में बाधक है । यह एक इस तरह की वृद्धि है जिस पर अल्प विकसित देशों को घमंड करने की वजाय शर्म आती है । इसके उलट विश्व में जापान, रूस और फ़्रांस जैसे देश भी हैं जहाँ की जनसँख्या वृद्धि नकारात्मक दौर में पहुँच गयी है और वहां की सरकारों को लोगों से जनसँख्या बढ़ाने की अनुरोध करनी पड़ रही है और कुछ देशों में सरकार के द्वारा एक से अधिक बच्चे पैदा करने पर पैसा भी दिया जा रहा है ।

****

* *सन्दर्भ: भारत का भूगोल: महेश बर्णवाल, एनसीईआरटी, इन्टरनेट(हेमंत सिंह,दृष्टि,आदित्य चोपड़ा,प्रभात खबर व अन्य आदि)*

****